=जानते; **तत्त्वेन**=तत्त्व से; **अतः**=इसलिए; **च्यवन्ति**=गिरते हैं; **ते**=वे।

अनुवाद

वास्तव में एकमात्र मैं ही सम्पूर्ण यज्ञों का भोक्ता और स्वामी (लक्ष्य) हूँ। परन्तु वे मेरे इस यथार्थ दिव्य स्वरूप को तत्त्व से नहीं जानते, इसीलिए गिरते हैं, अर्थात् पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं।।२४।।

तात्पर्य

स्पष्ट उल्लेख है कि वेदों में जितने भी प्रकार के यज्ञों का विधान है, उन सबका यथार्थ लक्ष्य श्रीभगवान् को प्रसन्न करना है। **यज्ञ** शब्द श्रीविष्णु का वाचक है। द्वितीय अध्याय में कहा जा चुका है कि कर्म का आचरण यज्ञ अर्थात् श्रीविष्णु की प्रीति के लिए ही करना चाहिए। 'वर्णाश्रमधर्म' नामक मानव संस्कृति की सिद्ध व्यवस्था का प्रयोजन विशेष रूप से श्रीविष्णु का तोषण करना है। अतएव श्रीकृष्ण स्वयं इस श्लोक में कहते हैं, 'मैं सम्पूर्ण यज्ञों का एकमात्र भोक्ता हूँ, क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ।'' इस पर भी अल्पज्ञ मनुष्य क्षणभंगुर भोगों के लिए देवोपासना करते हैं। इसी कारण वे संसार में गिरते हैं और जीवन के अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त नहीं हो पाते। यदि किसी को कोई लौकिक इच्छा हो तो उसके लिए भी परमेश्वर श्रीभगवान् से ही याचना करनी चाहिए। यद्यपि इसे शुद्ध भक्ति नहीं कहा जा सकता है; परन्तु फिर भी यह देवोपासना से कहीं श्रेष्ठ है। इससे अभीष्ट सिद्धि हो जायगी।

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।।२५।।

यान्ति=प्राप्त होते हैं; **देवव्रताः**=देवताओं की उपासना करने वाले; **देवान्**=देवताओं को; **पितॄन्**=पितरों को; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **पितृव्रताः**=पितरों को पूजने वाले; **भूतानि**=भूतों को; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **भूतेज्याः**=भूतों के उपासक; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **मत्**=मेरे; **याजिनः**=भक्त; **अपि**=ही; **माम्**=मुझ को।

अनुवाद

देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं; भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, और मेरे भक्त मुझ को ही प्राप्त होते हैं।।२५।।

तात्पर्य

यदि किसी मनुष्य को चन्द्र, सूर्य, आदि लोकों को जाने की कामना हो तो लक्ष्य के अनुसार वैदिक-विधान का पालन करने से अभिलाषित लोक प्राप्त किया जा सकता है। इन विधानों का वेदों के 'दर्शपौर्णमासी' कर्मकाण्ड में विशद वर्णन है। वहाँ नाना लोकों के अधिपति देवताओं की अलग-अलग उपासना का विधान है। इसी प्रकार एक विहित यज्ञ से पितृलोक प्राप्त हो सकता है। ऐसे ही प्रेतलोकों में जाकर यक्ष, रक्ष अथवा पिशाच योनि को प्राप्त किया जा सकता है। पिशाचोपासना को